Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 9, October-2018, ISSN 2230-7540

हिन्दी कविता और स्त्री विमर्श रमणिका गुप्ता के काव्य में स्त्री विमर्श

Ramita Devi*

MA in Hindi (UGC NET) PGT in Hindi

शोध आलेख सार: *स्त्री ईश्वर की अनुपम कृति है। इससे भी अधिक अनुपम है उसकी कार्यक्षमता। स्त्री ने स्वयं को समय के अनुसार परिवर्तित किया है, उसने घरेलु कार्यों के साथ-2 पढ़-लिखकर घर से बाहर निकलकर भी जीवन यापन के लिए कार्य करना प्रारंभ किया है।*

स्त्री-विमर्श की क्रांति एक दिन में ही नहीं आई इस क्रांति की ज्वाला को प्रज्जवलित करने के लिए एक-कदम बढ़ाने में बरसों लंबा समय लगा है।

संकुचित विचारधारा के लोग स्त्री-विमर्श को पुरुषों के विरुद्ध आंदोलन के रूप में देखते हैं। स्त्री-विमर्श का अर्थ पुरुषों को विरोध करना नहीं है। स्त्री-विमर्श परिवार तथा समाज को तोड़ने का काम नहीं करता। स्त्री-विमर्श के द्वारा स्त्री को समाज में सम्मान दिलाना ही उसका एकमात्र दायित्व रहा है। स्त्री-विमर्श की विचारधारा को असमानता के चश्में से देखना निरर्थक है। स्त्री समाज का अहम् हिस्सा है उसको मुक्ति दुखों से मुक्ति दिलाना तथा मनुष्य के रूप में उससे व्यवहार करना ही मानवीयता है।

रमणिका गुप्ता की कविताओं का ध्यान से अंकन किया जाए तो उनकी कविताओं में स्त्री के विविध रूपों के दर्शन हम करते हैं। रमणिका जी ने अपने काव्य में स्त्री जीवन के यथार्थ को भलीभाँति चित्रित किया है। रमणिका जी ने पूरा प्रयास किया कि पात्र काल्पनिक न होकर सजीव धरातल से लेकर उनको अमर रूप प्रदान किया जाए।

मुख्य शब्द: *- यथार्थ, संकुचित, मूलभूत, अस्तित्व, स्वाभिमान।*

----------X----------

विषयवस्तुः

हमारी सामाजिक व्यवस्था ने हमेशा स्त्री को घर की चारदीवारी में रहकर केवल दूसरों के लिए त्याग की मूर्त्ति बना दिया और उसको स्वयं के बारे में सोचने का कोई अवसर प्रदान नहीं किया। स्त्री ने जब-जब समाज में निजत्व के बारे में मंथन किया उस पर न जाने कितनी बंदिशें लगाकर पुरुष पथबाधा बनकर खड़ा हो गया।

"सीमाएँ । परिधियाँ

और घेरे

रास्ता रोक

मुझसे लिपट

मुझसे घेर

मेरी गति रोकते हैं

क्योंकि मैं आरत हूँ"1

मूलभूत सच तो यह है कि पुरूष प्रधान समाज स्त्री की असाध्य कार्यक्षमता से भयभीत है। वो सोचता है कि स्त्री में अनोखी शक्ति है यदि उसको समाज में स्वतंत्र कर दिया जाएगा तो वह अपनी कबिलियत के बल पर सबको अपने अधीन कर लेगी। इसी भय के कारण वह स्त्री को बंदिशों में रखकर स्वयं का साम्राज्य स्थापित करना चाहता है। पुरूष प्रधान समाज ने सोचा है कि यदि स्त्री अपने बारे में सोचने

www.ignited.in

लगेगी तो हमारे लिए चुनौतियाँ खड़ी हो जाएगी। स्त्री पुरूष के प्रेम को भी भीख के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहती। स्त्री कोई वस्तु नहीं है जिसे कहीं पर भी रख दिया जाए उसका भी अस्तित्व है।

"तरस खाकर मेरी झोली में

प्यार की भीख मत डाल

मेरे तन को नहीं

मुझे प्यार कर

नहीं तो मेरा मन

गौण हो जाएगा।"2

रमणिका जी ने कहा है कि स्त्री को पुरूष के निस्वार्थ भाव के प्रेम की आवश्यकता है जो उसके मन, आत्मा को समझ सके तथा उसके अस्तित्व को मजबूती प्रदान करे। पुरूष प्रेम स्त्री को शक्ति प्रदान करे उसको स्वछंद आकाश में उड़ने की आजादी हो। रमणिका जी लिखती हैं -

प्रेम मुक्त करता है,

न गुलाम बनाता है

न बनता है।

पुरूष स्त्री को अपनी संपत्ति के रूप में देखता है। स्त्री को संपत्ति नहीं उसका भी मन, आत्मा और अस्तित्व है। स्त्री जब पुरूष के बंधन से मुक्त हुई तो उसने पुरूष की आर्थिक पराधीनता को नकार दिया। वह स्वयं घर की चारदीवारी से निकलकर काम करने लगी। वह आर्थिक रूप से तो सबल बनी ही साथ में उसका आत्मविश्वास भी जागृत हुआ। स्त्री जीवन निर्वाह करने में सक्षम बनी तथा उसने अत्याचार के खिलाफ आवाज उठानी प्रारम्भ की। वह अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत हो गई। 'पंखों में होंगे निश्चय' कविता में स्त्री स्वाभिमान तथा आत्मविश्वास से भरी प्रतीत होती है तथा पुरूष की गुलामी को अस्वीकार करती है -

"मुक्त होने दो हमें

अपने आप से

मन की गाँठ

आँचल की आबरू

आँखों की लाज और

अपनी ही गिरफ्त से

जुल्म अपने आप बंद जो जाएंगे।"3

स्त्री मुक्ति के स्वर को बुलंद करने वाली रमणिका गुप्ता जी परम्परा, संस्कारों के बंधन में बंधकर जीवन नहीं जीती। रमणिका जी नहीं चाहती कि स्त्री पति के खूँटे से बंधी रहे। स्त्री यदि असहाय बनकर रहती है तो समाज, परम्पराएँ, संस्कार उसको खुलकर साँस भी नहीं लेने देते। स्त्री स्वयं अपने मूल्य स्थापित करने में विश्वास रखती है। जिस समाज ने उसको यातनाएं दी उसके बारे में वह क्यों सोचे। पुरूष केवल उसको देह के रूप देखता है। इसलिए आज स्वछंद आकाश में उड़ान भरना चाहती है। स्त्री चाहती है कि वह अपने लिए भी जी ले। अपने इन्हीं स्वप्नों को पूरा करने के लिए वह नए मूल्य स्थापित करना चाहती है -

"पर आज मैंने मूल्य बदल दिए हैं फिर

भले दुनिया ने उन्हें नहीं माना

मैंने रिश्ते तोड़ दिए हैं

ताकि नारीपन की ग्रन्थि से मुक्ति पा सकूँ

इन्सान बन सकूँ।"4

स्त्री को समझ में आ गया है कि उसे अपने लिए आवाज उठानी होगी। बिना आवाज उठाए स्त्री स्वतत्रंता की कामना निरर्थक प्रतीक होती है वह कहती है -

प्रचलित मूल्यों को तोड़कर

प्रस्थापित मान्यताओं के खिलाफ

विद्रोह का झंडा बुलंद करूँगी।"5

निष्कर्ष:

रमणिका जी कविताओं में साफ-2 दिखाई पड़ता है कि वो स्त्री को कमजोर नहीं समझती। उनकी स्त्री पात्र कहीं भी दया, करूणा की याचना करती दिखाई नहीं देती। रमणिका जी की कविताओं में पुरूष समाज के प्रति बहुत अधिक आक्रोश दिखाई देता है। रमणिका जी को नारी का दासी वाला दीन हीन रूप स्वीकार नहीं है और न ही पति-निष्ठा पत्नी बनने

का। रमणिका जी स्त्री को पुरूष के समान ही देखना चाहती हैं।

“उम्र की सलेटी लिखते-लिखते घिसकर छोटी होती जा रही है।

“पर गलत हैं मेरे

कि खत्म ही नहीं होते

चूँकि दर्द मेरे

कम नहीं होते?”6

संदर्भ सूची

1. अब और तब, रमणिका गुप्ता, नवलेखन प्रकाशन, संस्करण 1968 पृ0 54.
2. अब और तब, रमणिका गुप्ता, नवलेखन प्रकाशन, 1968, पृ0 88.
3. पंखों में होंगे निश्चय, रमणिका गुप्ता
4. खूँटे, रमणिका गुप्ता, पराग प्रकाशन, संस्करण 1980, पृ0 17.
5. खूँटे, रमणिका गुप्ता, पराग प्रकाशन, संस्करण 1980, पृ0 31.
6. अब और तब, रमणिका गुप्ता, नवलेखन प्रकाशन, संस्करण 1968 पृ0 131

Corresponding Author

Ramita Devi*

MA in Hindi (UGC NET) PGT in Hindi

ramitadevi123@gmail.com